शयनं, सिद्धाँत को वे महत्व देते हैं। श्री पंतजी का जीवन दर्शन अत्यंत आदर्शयुक्त हैं। वे संसारे को स्वर्ग बनाना चाहते हैं। और मानव को ईश्वर तुल्य स्थान प्रदान करते हैं। कहा जाता हैं कि काव्य की उत्पत्ति शुद्ध अनुभूती से होती हैं। इन अनुभूतियों में एक वेदना भी हैं। वेदना को काव्य जननी कही हैं। कविवर पंत में वैयक्तिकता और विश्ववेदना का स्वर मुखरित हैं। उनहोंने कहा हैं.

वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान।
तारों का नभ तारों का नभ
सुन्दर समृद्ध आदर्श सृष्टि।

निष्कर्षत: -

कह सकते हैं कि श्री पंतजी की छायावादी कविताएँ भावपक्ष तथा कलापक्ष की दृष्टि से अनुपम हैं। उनकी रचना में वैयक्तिकता, संगीतात्मकता भावप्रणता आदि विशेषताएँ अन्तलीन हैं। हिन्दी गीतकारों मों श्री सुमित्रानन्दन पंत का महत्वपूर्ण स्थान हैं। रहस्यात्मकता, गीतात्मकता, प्रकृति, सुन्दर, अभिव्यंजनापक्ष आदि उनकी रचनाओं में बखूबी मिलते हैं।पंत की साहित्य यात्रा के विभिन्न सोपान हैं जैसे छायावाद, प्रगतिवाद, आद्यात्मवाद, अरविंद दर्शन, आदि। छायावाद के चार कवियों मे पंत के स्थान प्राउढ़ तथा उन्नत हैं।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ
सुमित्रा नंदन पंत –राजनाथ शर्मा

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री जीवन के चित्र

डॉ.सारिका देवी
डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या उ0प्र0

स्त्री सदैव ही अपनी अस्मिता को लेकर आवाज उठाती रही है। यह बात और है कि इस शोरगुल भरे समाज में उसकी आवाज बहुत मन्द सुनाई देती है। जिसे अधिकतर समाज अनदेखा करता आया है और जिसने भी उसकी आवाज सुनी भी वह बहुत आगे नहीं बढ़ा पाया है। लेकिन प्रयास निरंतर होते रहे हैं और यह प्रयास तब तक जारी रहेगा जब तक स्त्री को उसका संपूर्ण अधिकार न मिल जाये।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक स्त्री के प्रति व्यवहार दोयम दर्जे का ही रहा है। आधुनिक समय में पुरुषवादी सत्ता समाज पर इस तरह हाबी है कि लोग स्त्रियों के बारे में सोचते हैं तो भी पुरुषवादी दृष्टिकोण से जैसे पुरुषों से अलग स्त्रियों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही न हो। पुरुष और स्त्री का शारीरिक गठन भी कहीं न कहीं स्त्री के उपेक्षित होने का मुख्य कारण रहा है।

साहित्य में रचानकार अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री अस्मिता को विभिन्न प्रकार से चित्रित करते रहे हैं। लेखक और लेखिका स्त्रियों के जीवन से सम्बन्धित विषमताओं को अपने रचनाओं के माध्यम से चित्रित करते रहते हैं। जिनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रगण्य है। जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न विसंगतियों को चित्रित करने का कार्य किया है।

मैत्रेयी जी की रचनाओं में मध्यवर्गीय ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के जीवन संघर्ष को बखूबी चित्रित किया गया है। मैत्रेयी जी ने स्त्री जीवन के उन सभी समस्याओं पर प्रकाश डाला है जिसके कारण स्त्रियों का जीवन दुरूह हो गया है। मैत्रेयी जी ने अपने निजी अनुभवों द्वारा उपन्यास लेखन क्षेत्र में वास्तविकता को स्थापित किया है। मैत्रेयी जी की उपन्यासों में वंचित, पीड़ित, दलित एवं पिछड़ी जाति की स्त्रियों के उत्थान को दिखाया गया है। उनके जीवन से जुड़े तमाम सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार प्रस्तुत किया गया है। साथ ही स्त्री संघर्ष की गाथा भी प्रस्तुत की गई है। मैत्रेयी जी ने स्त्रियों के अधिकारों के प्रति चेतना जागृत करने का संपूर्ण प्रयास किया है। मैत्रेयी जी अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री समाज में वो क्रांति लाना चाहती है, जिसमें स्त्रियों को पुरुषो के समान अधिकार मिले। वह अपनी निर्णय के लिये स्वतंत्र हो। समाज में स्त्री, पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हो।

''किसी कार्य का अनुभव बिना कारण के ही नहीं होता है। साफ -साफ दिख रहा है कि स्त्रियों, आदिवासियों और दलितों के बारे में अब तक जो लिखा गया है वह अनुमान के आधार पर है। जबकि सच्चाई आयेगी अनुभव के आधार पर चित्रित करने से''।

अपनी रचनाओं में स्त्री को आधार बनाकर लिखने वाली मैत्रेयी पुष्पा कहानी उपन्यास और स्त्री विमर्श के लिए विशेष रूप से जानी जाती है। इन्होंने विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी की है। मैत्रेयी जी का रचना संसार में प्रमुख स्थान रहा है जिसका प्रमुख कारण उपन्यास विधा रही है। जिसमें इन्होंने ग्रामीण जीवन की यथार्थ घटना को चित्रित किया है जिसमें स्त्री चरित्र प्रमुख रहा है।''मैं अपनी बेटी को पढ़ा लिखाकर बड़ा करूँगी कि मेरे, तुम्हारे बाद वह अपने दुश्मनों का मुकाबला करे।''मैत्रेयी जी ने अपने लेखन का आरम्भ ''स्मृति दंश'' नामक उपन्यास से किया। गाँव की पृष्टिभूमि मे रची बसी जीवन के गन्ध को

समाज में अपनी भूमिका के रूप में दर्शाने वाली मैत्रेयी जी ने अपने पहले उपन्यास स्मृति दंश में एक असहाय स्त्री के जीवन की गाथा को चित्रित किया है।विंध्य के अंचल में पली-बढ़ी 'भुवन' ससुराल में तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करती है और अन्त में उसे अपने प्राण गंवाने पड़ते है। स्मृति दंश में भुवन का ऐसा अन्त मैत्रेयी जी के मन को उद्वेलित करता है जिसे उन्होंने नये सिरे से ''अगनपाखी'' में प्रस्तुत किया है। ''स्मृति दंश' और 'बेतवा बहती रही' दोनों ही 'कथा' कथा की दृष्टि से बहुत मार्मिक है किसी भावुक पाठक की आंखों को अश्रुपूरित कर देने वाले! दोनों ही उपन्यासों में परम्परागत पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचार का अंकन किया गया है।''

मैत्रेयी जी ने 'इदन्नमम' में विंध्य अंचल में बसे समुदाय की पृष्ठभूमि तैयार की है जिसमें ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी समस्याएं उद्घाटित हुयी हैं। 'इदन्नमम' दलित समाज के पुनर्निर्माण का स्वप्न है जिसे मैत्रेयी जी ने मंदा के जरिये स्त्री मुक्ति को उद्घाटित किया है। इन्हीं नारी पात्रों को देखते हुए डॉ0 प्रभा खेतान लिखती है-

''मानवीय सम्बन्धों के कुछ ऐसे नैसर्गिक शाश्वत मुद्दे हैं जिन पर अब तक स्त्री खामोश रही है। हाँ डरते-डरते ही सही अब उसने बोलना शुरू किया है।''

'चाक' अर्थात् घूमता हुआ पहिया जिस पर गीली मिट्टी को मनचाहे आकार में ढ़ाला जाता है। यह उपन्यास बुंदेलखण्ड की धरती पर बसेरा करने वाली साहसी स्त्रियों की गाथा है। जो समाज में एक नयी नैतिकता को जन्म देती है। कथा की मुख्य पात्र 'सारंग' और 'श्रीधर' हैं। सारंग ही है जो चाक पर गीली मिट्टी के ढ़ेले की भाँति संवारी जाती है।

'झूलानट' यह एक छोटे से परिवार की कहानी है। एक जुझारू माँ, दो बेटे और एक उतनी ही जुझारू बहू की। बालकिशन, बालकिशन की माँ और शीलो जो बालकिशन के बड़े भाई सुमेर की पत्नी है। शीलो कहानी की एक ऐसी पात्र है जो संघर्षशील स्त्री है। शीलो के रूप में एक जाट युवती के परम्परागत मूल्यों को चुनौती देने, स्त्री संहिता को नकारने और विद्रोह करने का चित्रण किया गया है।

'अल्मा कबूतरी' बुंदेलखण्ड की विलुप्त जनजाति 'कबूतरा' को लेकर यह उपन्यास रचा गया है। 'अल्मा कबूतरा' समाज के एक मात्र पढ़े-लिखे व्यक्ति रामसिंह की पुत्री है। रामसिंह ने अल्मा को जन्म से ही कबूतरा बस्ती और उसकी सामाजिक बुराइयों से दूर रखा है। कहानी के अन्त में अल्मा ने अपने पिता के मृत्यु का प्रतिशोध लिया साथ ही पूरे कबूतरा समाज में कबूतरा जाति को निश्चित स्थान दिलाने का सम्पूर्ण प्रयास किया।

''मगर अल्मा अपनी बान नहीं छोड़ेगी। मरे या रहे? अल्मा माने आत्मा, बप्पा ने सोच-समझकर नाम रखा था, कहते थे आत्मा नहीं मरती।''

'अगनपाखी' यह उपन्यास समाज को एक नयी दृष्टि प्रदान करती है। इस उपन्यास में छल, छद्म, बैर-प्रीति, घात-प्रतिघात और लोक मान्यताओं का सहज प्रस्तुतीकरण हुआ है। यह उपन्यास रिश्तों की दहलीज पर की गई साजिशों का एक पुलिन्दा है। जिसकी भुग्त भोगी 'भुवन' जो कभी रिश्तों की सामाजिक बुनावट से दरकिनार होती है तो कभी फरेब से।

यह हमारे समाज की वास्तविकता है कि स्त्री न मायके की हकदार रहती है न ससुराल की। वैवाहिक व्यवस्था का ढ़ाँचा स्त्रियों के अस्तित्व को कुचल रहा है। लोभ-प्रलोभन में फांसकर हर जगह उसके साथ छल हो रहा है। तभी तो भुवन कहती है-

''हाँ जाड़े में भी ठण्डे जल से नहाना बताया है, फिर भी भीतर का गुस्सा नहीं सिराता।''

विडम्बनाओं से घिरी हुई 'भुवन' राह तलाशती है।

औरत की विषमता को मैत्रेयी जी ने भुवन में कूट-कूटकर भरा है। स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में किस हद से नहीं गुजरती। पारम्परिक रीति-रिवाज एवं आदर्शा पर मैत्रेयी जी ने प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

'विजन' महानगरीय जीवन में व्याप्त मध्यवर्गीय परिवारों में बसने वाली सोच और दिखावेपन को इस उपन्यास में रेखांकित किया गया है। डाक्टरी जीवन में हो रहे भेद-भाव, स्त्री की उपेक्षा एवं नैतिक मूल्यों के स्थान पर पारम्परिक रूढ़ियों को अधिक वर्चस्व सामाजिक न्याय में बांधा डाल रहे हैं। स्त्री भले ही आर्थिक रूप से समर्थ हो जाए लेकिन चलना उसे सामाजिक परम्पराओं पर ही है। इसी द्वंद्व को झेलत हुई डाक्टर नेहा को विषय का केन्द्र बनाया गया है। मैत्रेयी जी ने नेहा और आभा के जरिये स्त्री के मनोभावों को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। स्त्री पुरुष के समान अधिकारों की बात की है। सदियों से चली आ रही रूढ़ि परम्परा को तोड़ना चाहती हैं। साथ ही चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे अनाचार को भी चित्रित किया गया है।

''पति की अनुगामनी बनना ही तो जीवन का ध्येय नहीं। सहगामिनी होती तो बात कुछ और होती। जिन्दगी को मिशन माना था आभा ने। मिशन, जो किसी काज के लिए होता है, महज व्यक्ति के लिए नहीं।''

'कही ईसुरी फाग' में मैत्रेयी पुष्पा ने ईसुरी और रजऊ की प्रेमकथा के साथ-साथ, ऋतु और माधव, तुलसीराम और माधुरी और सालिगराम कहारे और सावित्री की प्रेमकथा को वर्णित किया गया है। इस उपन्यास में रज्जो एक असाधारण मानसिकता की उपज है जिसमें स्त्री चेतना अपने उच्च भावभूमि के साथ उभरकर आयी है।

'त्रियाहट' त्रिया हट अर्थात् एक स्त्री की हठ। मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री के जीवन से जुड़ी, स्त्री शिक्षा, पंचायत चुनाव में महिला आरक्षण, विधवा विवाह, व्यवसाय एवं स्त्री अस्मिता जैसी समस्याओं पर प्रकाश डाला है, जिसकी मुख्य पात्र है उर्वशी।

'गुनाह-बेगुनाह' उपन्यास महिला कान्स्टेबल 'इला चैधरी' के नौकरी के दौरान आयी उन महिलाओं के दास्तान जिन्हें बेगुनाह साबित करने के लिए इला चैधरी मानसिक एवं सामाजिक द्वंद्व झेलती हैं। उनकी आत्मियता भरी दृष्टि महिला गुनहगारों से एकाकार हो उठती है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि कानून के पद पर बैठे अधिकारी, पुलिसकर्मी, सहकर्मी सभी अपने हित कामनाओं की पूर्ति हेतु मानवीय संवेदनाओं से रिक्त हो चुके हैं। दहेज विरोधी कानून, घरेलू हिंसा, सामूहिक बलात्कारों की असलियत और औरतों द्वारा अंजाम दिये गये हत्या कांडों के कच्चे चिट्ठे खोले गये हैं।

'फरिश्ते निकले' टूटे हुये घरौदों को जोड़ने के खातिर स्त्री किस-किस राह से गुजरती है, संभलती है और नया आशियाना बनाती है। ऐसी ही चरित्र को लेकर 'बेला बहू' को 'फरिश्ते निकले' उपन्यास में चित्रित किया गया है। मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास में तत्कालीन ग्रामीण समाज एवं राजनीतिक दलों में फैले अनाचार, अत्याचार को प्रकट किया है। फूलन कहती है-

''बेला अपने समाज को बागी औरतें ही बदल सकती हैं, भली औरतों को तो मर्द गन्ने की तरह पेरते रहते हैं और मूछों पर ताव देते हैं। भली औरते, बेचारी, अपने 'भोलेपन' को ढ़ोती हुई तड़पती रहती हैं।''

मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री पर हो रहे अत्याचार एवं बलात्कार का कच्चा चिट्ठा पेश किया है। महिलाओं के बागी रूप का कारण पुरुषवादी सत्ता हावी होना है। बेला बहू ने बीहड़ो में एक नये समाज का निर्माण किया है। जहां पुरुषों का वर्चस्व न हो शान्ति और प्रेम हो।

'नमस्ते समथर' में साहित्य संस्थाओं में चलनेवाली दांव-पेंच एवं

राजनीतिक भ्रष्टाचार का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। यह संस्मरण उपन्यास के रूप में मैत्रेयी जी के अपने जीवन दिल्ली के 'हिन्दी एकादमी' में कार्यरत अनुभव है। जहाँ सम्मान प्राप्त करने की होड़ लगी है। कथा की मुख्य पात्र कुन्तल है जो 'भारतीय साहित्य संस्था' की उपसंयोजिका है।

''मेरे मन में बार-बार ये विचार उठता है कि तुम्हारे साथ मुझे समथर जाना चाहिए। यह आकांक्षा जल्दी ही पूरी होगी मगर किस दिन पूरी होगी यह निश्चित नहीं है। 'समथर' यह शब्द या कस्बा भर नहीं, बहुत कुछ है समझो तो।''

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को समाज में ऊँचा दर्जा दिया है परन्तु अनेक कारणों से भारतीय स्त्रियों की स्थिति निरन्तर कमजोर होती गई और उन्हें पुरुषों द्वारा असीमित मर्यादा और अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया गया है। स्त्री परम्परा मूल्यों को नकारते हुए अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा चाहती है। इतिहास, सभ्यता और धर्मशास्त्रों ने स्त्री को बधिया बना दिया है। उसकी सारी सृजनशीलता दमन कर दिया है।

स्त्री चेतना से तात्पर्य स्त्री की अस्मिता या विभिन्न स्तरों पर प्राप्त अनुभवों के स्वरूप से है जिसमें नारी आधुनिक समाज में अपना अधिकार प्राप्त कर सके। नारी चेतना वह विचारधारा है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग करता है। मैत्रेयी जी ने अपने उपन्यासों में नारी चेतना को प्रमुखता से मुखर किया है। उनके उपन्यासों के अधिकतर स्त्री पात्र, ग्रामीण एवं अनपढ़ हैं लेकिन अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं।

''स्त्री समानता का संघर्ष सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक इन तीनों ही स्तरों पर एक ही साथ चलना चाहिए।''

****

संदर्भ सूची

(1) 'वागर्थ'- सितम्बर 2017, पृष्ठ-39
(2) 'कस्तूरी कुडल बसै'- मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-29
(3) 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास'-डा0 गोपाल राय, पृष्ठ- 387
(4) आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण-मो0 अजहर ढेरी वाला, पृष्ठ-99
(5) अल्मा कबूतरी-मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-347
(6) अगन पाखी-मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-96
(7) विजन-मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-120
(8) फरिश्ते निकले-मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-87
(9) नमस्ते समथर-मैत्रेयी पुष्पा, पृष्ठ-12
(10) स्त्री वादी साहित्य विमर्श-जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृष्ठ-204

प्रो. वशिष्ठ द्विवेदी : एक रचनात्मक व्यक्तित्व

- सीमांकन यादव
शोध-छात्र हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय 6387482349

प्रो. वशिष्ठ अनूप जहाँ कवि हृदय की उच्चता को प्राप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने पाठक वर्ग ; उसमें भी विशेषत: छात्रों के बीच तमाम साहित्यिक-वैचारिक गुत्थियों को बहुत ही सरल एवं सहज ढंग से उपस्थित करने का सार्थक प्रयास करते हैं| आप अपने गीत-ग़ज़लों के माध्यम से तो सभी का मन मोह ही लेते हैं साथ ही पाठक को घर-गाँव परिवार, मेले, रिश्तों आदि की आत्मीयता में तत्काल पहुंचा देते हैं या यूँ कहें कि मन और मस्तिष्क में पुनरावृत्ति करा देते हैं| ठीक वैसे ही अपने छात्रों के लिए इतिहास,भाषा, साहित्य,विमर्शादि पर अत्यंत उपयोगी तर्कों एवं तथ्यों के साथ सहजाभिव्यक्ति देते नज़र आते हैं; 'हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास' (2012) इसी तरह का एक पुस्तकाकार प्रयास था जो विद्यार्थियों द्वारा ख़ूब पढ़ा गया| इस इतिहास-ग्रंथ की ख़ासियत यह है कि इसमें जनवादी कविता,गीत,हिन्दी ग़ज़ल आदि के स्वरूप एवं विकास पर बख़ूबी चर्चा की गयी है साथ ही स्त्री,दलित,जनजातीय विमर्श और इनके साहित्य पर भी एक बहस छेड़ी गयी है| यानि आदिकाल से लेकर आधुनिक काल से होते हुए उत्तर-आधुनिकता एवं भूमण्डलीकरण के साहित्य पर भी चर्चा को स्थान देता हुआ दिखता है यह 'हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास'| ठीक इसी तरह 'समकालीन कविता के प्रतिमान', 'आधुनिक हिन्दी कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि और सृजन','कविता के जनवादी स्वर','जगदीश गुप्त का काव्य संसार','समकालीन हिन्दी ग़ज़ल','हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप और महत्वपूर्ण हस्ताक्षर','हिन्दी गीत का विकास और प्रमुख गीतकार','गीत का आकाश','हिन्दी भाषा,साहित्य एवं पत्रकारिता का इतिहास','व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी तथा साहित्यशास्त्र' आदि प्रो० वशिष्ठ अनूप द्वारा रचित महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं जिनके द्वारा हिन्दी साहित्य को समग्रता में जाना एवं समझा जा सकता है| 'हिन्दी-भाषा और साहित्य का इतिहास' पुस्तक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गयी थी जिसका प्रकाशन सन् 2006 ई० में हुआ| यह पुस्तक किसी भी पाठ्यक्रम के विद्यार्थी को हिन्दी भाषा और साहित्य में समझ विकसित करने हेतु ज्ञानप्रद है| इस पुस्तक में हिन्दी ग़ज़ल के संदर्भ में प्रो० वशिष्ठ अनूप कहते हैं- "ग़ज़ल हिन्दी की एक अपेक्षाकृत नयी विधा है किन्तु देखते ही देखते यह हिन्दी काव्य की एक अत्यंत सशक्त एवं महत्वपूर्ण विधा का स्वरूप ग्रहण करने की स्थिति में पहुँच गयी है| विगत तीन दशकों में ग़ज़ल को जो लोकप्रियता प्राप्त हुई है,वह हिन्दी साहित्य के लिए एक सुखद एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि है| ठीक से देखा और समझा जाए तो इस बीच ग़ज़ल लिखने वालों की संख्या बहुत बढ़ी है किन्तु हिन्दी ग़ज़ल के आलोचकों की संख्या कम है जो वर्तमान समय में लिखी-रची जा रही ग़ज़ल में समाहित गुण-दोषों,संभावित सुधारों को कहने का बीड़ा उठायें| ऐसे में प्रो० अनूप स्वयं तो एक सशक्त ग़ज़लकार हैं ही साथ ही एक सशक्त आलोचक भी हैं,जो कहते हैं-'हिन्दी ग़ज़ल को अपने आलोचक स्वयं पैदा करने होंगे|" प्रो० अनूप का एक बहुचर्चित शेर देखें- तुलसी के,जायसी के,रसखान के वारिस हैं, कविता में हम कबीर के ऐलान के वारिस हैं| एक अच्छी रचना समाज की जीवंत तस्वीर तो प्रस्तुत करती है,उसकी आलोचना भी करती है और उसे बदलने के लिए भी प्रेरित करती है| यह ज़रूरी नहीं कि परिवर्तन की यह प्रेरणा बहुत मुखर हो| रचना में विचार कभी-कभी प्रच्छन्न भी होते हैं जैसे शरीर में रक्त| साहित्य के संदर्भ में प्रो० अनूप कहते हैं- "साहित्य में मानव-मन की सहजवृत्तियों और संवेदनाओं की